समाचार संवाददाताओं वीडियो शूट करने के लिए और इंटरनेट समाचार पृष्ठों के लिए आवश्यक संक्षिप्त तरीके में लिखने के लिए सिखाया जा रहा है। दुनियाभर के स्कूलों में पत्रकारिता के छात्रों को मीडिया के कार्य कौशल में शामिल प्रिंट, प्रसारण और वेब की जरूरत के बारे में सिखाया जा रहा है। कुछ समाचार पत्रों ने अपने अभियान में तेजी लाते हुए इंटरनेट को एकीकृत करने का प्रयास किया है। यानी संवाददाताओं से दोनों प्रिंट और ऑनलाइन मीडिया में दिखाने के लिए स्टोरी फाइल करने के लिए कहा जा रहा है। आज अनेक समाचार पत्र अपने ऑनलाइन एडिशन की वजह से पैसे कमा रहे हैं और अपनी बेबाक राय को रख रहे हैं। प्रॉफिट मार्जिन और दैनिक समाचार पत्रों में गिरावट ने वेबसाइटों से राजस्व प्राप्त करने के नए तरीकों को सोचने के लिए मजबूर किया है, खास बात है कि इसकी सदस्यता मुफ्त है, यानी कोई व्यक्ति विश्व के किसी भी कोने से अखबार देख सकता है, पढ़ सकता है और अपने विचारों को स्पष्टता के साथ रख सकता है वह भी बिना किसी चार्ज के अब विदेशों के ही नहीं, भारत के भी अधिकांश अखबार अपने ऑनलाइन संस्करणों पर विशेष ध्यान दे रहे हैं। ऑनलाइन न्यूजपेपर के कुछ लाभ होते हैं। जैसे यूजर्स इसे बिना कुछ रकम के ही खबरों को पढ़ सकते हैं, यह दिनभर अपडेट होता रहता है जिससे इंटरनेट के माध्यम से पाठक पूरा दिन नवीनतम खबरों से जुड़ा रहता है। केवल कंप्यूटर पर बैठा व्यक्ति समाचार पत्रों को पढ़ सकता है, उससे जानकारी हासिल कर सकता है।

दरअसल खबरों के बाद से ट्रेडिशनल न्यूजपेपर को अपनी स्थिति बचाने के लिए कई बदलाव करने पड़े जिससे क्षेत्रीय समाचार पत्रों को ऑनलाइन एडिशन देने के लिए मजबूर होनो पड़ा। हालांकि ऑनलाइन अखबारों की समस्याएं भी कम नहीं हैं। भारत के हिन्दी के ऑनलाइन समाचार पत्रों की सबसे बड़ी समस्या फोंट की है। इसके लिए लोगों को विशेष प्रकार के सॉफ्टवेयर की जरूरत होती है जिससे उस समाचार या खबरों को पढ़ सकें। उदाहरण के तौर पर बंगला भाषा में प्रकाशित होने वाला अखबार आनंद बाजार पत्रिका पढ़ने वाले व्यक्ति को वर्तमान अखबार पढ़ने के लिए उसके फोंट को डाउनलोड करना होगा, जबकि दोनों ही अखबार बंगला भाषा के हैं। दूसरी सबसे बड़ी समस्या है प्रथम पृष्ठ पर अंधाधुंध विज्ञापनों की, जिससे पाठकों को काफी असुविधा होती है। पाठक इन विज्ञापनों को नहीं देखना चाहते हैं, ये अनावश्यक जानकारी उन्हें नागवार गुजरती है। कई बार लुभावने विज्ञापनों के रंग-रूप पाठकों का ध्यान भंग होता है और वे जल्द से जल्द वेबपेज को बंद करना चाहते हैं। इसी में से एक और बड़ी समस्या है एनिमेटेड विज्ञापनों की जिससे अखबार व्यवसायिक ज्यादा लगता है, पठनीय कम। इसके अलावा ऑनलाइन अखबारों के लेआउट और डिजाइन बहुत की कमजोर होते हैं जिससे पाठकों को उब सी आने लगती है। बहुत कम ऑनलाइन अखबार ऐसे हैं जिसके ग्रिड, कलर, डिजाइन और ले आउट अच्छे होते हों। कई बार ऑनलाइन अखबार नॉन-लिंक टैक्स्ट और विज्युअल इफैक्ट का कम होना पाठकों को निराश करता है।

ऑनलाइन अखबारों की समस्याएं भी कम नहीं हैं। भारत के हिन्दी के ऑनलाइन समाचार पत्रों की सबसे बड़ी समस्या फोंट की है। इसके लिए लोगों को विशेष प्रकार के सॉफ्टवेयर की जरूरत होती है जिससे उस समाचार या खबरों को पढ़ सकें। दूसरी सबसे बड़ी समस्या है प्रथम पृष्ठ पर अंधाधुंध विज्ञापनों की, जिससे पाठकों को काफी असुविधा होती है। पाठक इन विज्ञापनों को नहीं देखना चाहते हैं, ये अनावश्यक जानकारी उन्हें नागवार गुजरती है।

ऑनलाइन अखबारों के टाइपोग्राफी और पैराग्राफ की स्टाइल मिस मैच होती है। कई बार लाइन की लंबाई और लीड खबरों को मॉनिटर पर पढ़ना बोझिल होता है। हालांकि ऑनलाइन प्रकाशकों को इंटरनेट पर इसकी लागत कम लगती है जिससे प्रिंटिंग और हार्ड कॉपी का खर्चा बच जाता है, लेकिन पाठकों से खबरों को देने के एवज में उचित मूल्य न पाना एक बड़ी समस्या है। भारत में आईटी इंफ्रास्ट्रक्चर काफी कमजोर है, इसलिए ऑनलाइन अखबार को पढ़ने के लिए हमें कंप्यूटर और इंटरनेट कनैक्शन की आवश्यक्ता होती है, फिर बिजली की आंख-मिचौली भी इसमें व्यवधान पैदा करता है।